हिन्दी (२०१)

प्रश्न 1.(क)

"रॉबर्ट नर्सिंग होम में" पाठ का मूल संदेश क्या है? अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर

"रॉबर्ट नर्सिंग होम में" पाठ का मूल संदेश यह है कि वृद्धावस्था में लोगों को उचित देखभाल और सम्मान मिलना चाहिए। बुढ़ापे में लोग अधिक संवेदनशील होते हैं। उन्हें परिवार और समाज का सहारा चाहिए। "रॉबर्ट नर्सिंग होम" वाले व्यक्ति को एक परिवार की भावना, साझेदारी और परोपकारी रूप से अनुभव करने का अवसर मिलता है जिससे उन्हें आत्म-सम्मान और समृद्धि की अनुभूति होती है।

प्रश्न २ (क)

'इसे जगाओ' कविता में सपनों में खोए रहने' तथा 'सपने देखने' में अंतर किया गया है। आप अपने भविष्य को सँवारने के लिए जो सपने देखते हैं, उन्हें पूरा करने के लिए क्या रूपरेखा बनाएँगे ?

उत्तर

'इसे जगाओ' कविता में सपनो के खोए रहने का अर्थ यह है कि व्यक्ति अपने जीवन के लक्ष्यों को भूल जाता है। सपने देखने का मतलब है कि व्यक्ति अपने भविष्य के बारे में आशावान और प्रेरित है। इन्हें पूरा करने के लिए व्यक्ति को स्पष्ट योजना और दिशा बनानी चाहिए ताकि सपने हकीकत बन सकें। मैं अपने भविष्य को सँवारने के लिए अपने परीक्षा में अच्छे नंबरों से पास होने का सपना देखता हूँ जिसके लिए मैंने रूप रेखा बनाई है थोड़ा -थोड़ा मेहनत करके अपना पूरा पाठ्यक्रम तैयार करना जिससे मैं परीक्षा के दिनों में भी सहज और शांत रह पाऊंगा और मेरा परीक्षाफल भी अच्छा आएगा।

प्रश्न · 3 (क)

'बीती विभावरी जाग री' कविता में क्या प्रमुख है - प्रकृति - चित्रण या राष्ट्रीय उद्बोधन ? अपने उत्तर के समर्थन में दो तर्क प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर

इस कविता का मुख्य विषय प्रकृति-चित्रण है। तर्क :-

- कविता में कवि ने रात के समाप्त होने और सुबह की ओर संकेत किया है, जो प्रकृति के विभिन्न रूपों को दर्शाता है। सुबह होते ही तारों के आकाश में डूबने, पक्षियों के चहचहाने, मंद-मंद पवन के बहने, लताओं में पुष्पों की रसयुक्तता को बताने के लिए मानवीकरण का उपयोग किया गया है। प्रकृति के ये क्रियाकलाप हमें अंधकार से प्रकाश, निष्क्रियता से सक्रियता, सन्नाटे से स्वर, स्थिरता से गति और रिक्तता से रसमयता की ओर जाने का संदेश देते हैं।

- प्रकृति की सुन्दरता और परिवर्तन को मुख्य रूप से व्यक्त किया है, जैसे रात का बीतना और सुबह का आना। प्रकृति से प्रेरणा लेने के लिए उद्बोधन किया गया है, लेकिन उद्बोधन के साथ-साथ प्रकृति और स्त्री के सौंदर्य और इन दोनों के सौंदर्य का संबंध चित्रित है।

प्रश्न. 4 (ख)

'गिल्लू' पाठ के आधार पर स्पष्ट करें कि मानव और पशु-पक्षी एवं प्रकृति के बीच एक सौहार्दपूर्ण संबंध बनाने में आपका क्या कर्तव्य है? ऐसे दो सुझाव प्रस्तुत करें जिससे मानव और प्रकृति के बीच सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण बनाने में सहायता मिल सकती है।

उत्तर

मानव और प्रकृति तथा पशु-पक्षी के बीच सौहार्द-पूर्ण संबंध बनाने के लिए हमारा कर्तव्य यह है कि हम उनके प्रति प्रेम और संवेदनशीलता दिखाएं। इस कथा के माध्यम से हमें प्राकृतिक संसाधनों के महत्व को समझने का संदेश मिलता है और यह दिखाता है कि मनुष्य और पशु-पक्षी एक-दूसरे के साथ सहयोगपूर्वक रहकर अपने आस-पास की प्राकृतिक विविधता का सम्मान कर सकते हैं।

सुझाव :

- हमें पशु-पक्षियों की देखभाल और संरक्षण के लिए जागरूकता फैलानी चाहिए।
- मानव और प्रकृति के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध बनाने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और पुनर्नवीनीकरण को बढ़ावा देना चाहिए।

प्रश्न . 5 (क)

'भारत की ये बहादुर बेटियां' महिलाओं की अभूतपूर्व उपलब्धियों को व्यक्त करता हुआ फीचर है। पाठ में शामिल किन्हीं दो महिलाओं की उपलब्धियों की विवेचना कीजिए।

उत्तर

'भारत की ये बहादुर बेटियां' एक फीचर है, जो विभिन्न क्षेत्रों में प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंची महिलाओं पर लिखा गया है। नारी शक्ति की दृष्टि से भारत किसी भी देश से पीछे नहीं है। इन्हीं बातों को इस प्रकार फीचर में दो नारियों के माध्यम से बताया गया है। आधुनिक नारियाँ छुई-मुई नहीं है, वे शक्ति-स्वरूपा हैं।

कल्पना चावला : अंतरिक्ष में पहली भारतीय महिला

कल्पना चावला का जन्म हरियाणा प्रांत के करनाल शहर में 1961 की पहली जुलाई को एक साधारण व्यापारी परिवार में हुआ था। शुरू से ही कल्पना के मन में अंतरिक्ष - विज्ञान के प्रति लगाव रहा और वे अंतरिक्ष की यात्रा के सपने देखती रहीं। जब अमेरिकी अंतरिक्ष यान के कोलंबिया मिशन के वैज्ञानिकों को चुनाव हो रहा था, तब १९६२

प्रतियोगियों में उन्हें सर्वाधिक योग्य पाया गया और उस मिशन का विशेषज्ञ बनाया गया। इसके लिए कल्पना ने कठोर प्रशिक्षण लिया और 19 नवंबर को पहली बार अंतरिक्ष की यात्रा पर निकल पड़ी। यह अभियान काफी सफल रहा और इस दौरान उन्होंने कई नए प्रयोग कर सबसे अपनी योग्यता का लोहा मनवा लिया।

बचेंद्री पाल : पहली महिला एवरेस्ट विजेता

कल्पना चावला की तरह ही बचेंद्री पाल भी साहस की पर्याय है। बचेंद्री को एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने वाली पहली भारतीय महिला होने का गौरव प्राप्त है। अगस्त, 1983 में जब दिल्ली में हिमालय पर्वतारोहियों का सम्मेलन हुआ, तब वे पहली बार तेनजिंग नोर्गे (एवरेस्ट पर चढ़ने वाला पहले पुरुष) तथा जुंको ताबेई (एवरेस्ट पर चढ़ा फहरा दिया। उस समय उनके साथ पर्वतारोही अंग दोरजी भी थे इस तरह, बचेंद्री को एवरेस्ट पर पहुंचने वाली पहली भारतीय महिला होने का गौरव प्राप्त हुआ।

प्रश्न • 6 (क)

आधुनिक हिंदी के किन्हीं पाँच रचनाकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व की समीक्षा करते हुए चित्र सहित उनके जीवनवृत्त और कृतित्व को संक्षेप में प्रस्तुत करें।

उत्तर

आधुनिक हिंदी के किन्हीं पाँच रचनाकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व की समीक्षा करते हुए चित्र सहित उनके जीवनवृत्त और कृतित्व -

मुंशी प्रेमचंद

मुंशी प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था, और वे हिंदी और उर्दू साहित्य के महान लेखक थे। प्रेमचंद को "उपन्यास सम्राट" के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों को अत्यधिक सरलता और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। उनके साहित्यिक कार्यों में भारतीय समाज की समस्याओं, विशेष रूप से गरीबी, भ्रष्टाचार, अन्याय, जातिगत भेदभाव और ग्रामीण जीवन का चित्रण बहुत गहराई से किया गया है।

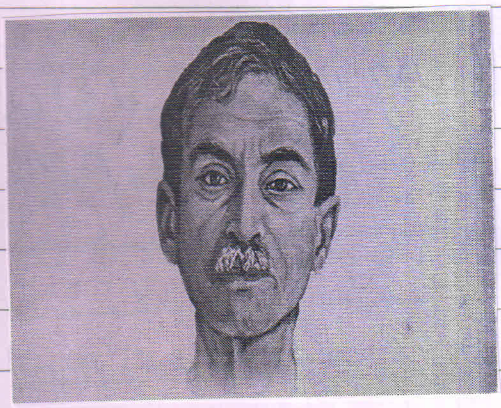

प्रेमचंद की सबसे प्रसिद्ध कृतियों में "गोदाम", "गबन", निर्मला" और "रंगभूमि" शामिल हैं। उनकी कहानियाँ सरल भाषा में लिखी गईं, लेकिन वे गहरी सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं को उजागर करती हैं। उदाहरण के लिए, "गोदान" में एक किसान होरी की कहानी है, जो अपने जीवन की कठिनाइयों से जुझता है। इस उपन्यास में प्रेमचंद ने दिखाया है कि किस प्रकार आर्थिक असमानता और जमींदारी प्रथा ने किसानों के जीवन को प्रभावित किया।

प्रेमचंद के साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने समाज के निचले तबके, विशेषकर किसानों और मजदूरों के जीवन को केंद्र में रखा। उनकी कहानियाँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं थीं, बल्कि समाज सुधार और न्याय की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम थीं। प्रेमचंद ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज में व्याप्त

कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई और एक नई सोच का प्रवाह किया।

महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा छायावाद युग की प्रमुख कवयित्री थीं। उनकी कविताएं गहरी भावुकता और संवेदनशीलता से भरी हुई हैं, जिनमें उन्होंने मानवीय पीड़ा और समाज में महिलाओं की स्थिति का चित्रण किया। महादेवी वर्मा का साहित्य मुख्य रूप से स्त्री-विमर्श और महिलाओं के अधिकारों पर आधारित था। उनकी कविताओं में प्रकृति और मानवीय अनुभवों का सुंदर चित्रण मिलता है।

उनकी सबसे प्रसिद्ध कृतियों में "यामा", "नीरजा", और "दीपशिखा" शामिल हैं। महादेवी वर्मा ने अपनी कृतियों में नारी के संघर्ष, उसकी पीड़ा और उसकी आंतरिक शक्ति को बहुत ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। उदाहरण के लिए, "यामा" में उनकी कविताएं नारी के भीतर की भावनाओं और

उसकी स्वतंत्रता की इच्छा का गहरा चित्रण करती है।

महादेवी वर्मा को हिंदी साहित्य में उनके योगदान के लिए कई पुरस्कार मिले, जिनमें ज्ञानपीठ पुरस्कार और पद्मभूषण भी शामिल हैं। उनके साहित्यिक कार्यों ने हिंदी साहित्य को एक नई दिशा दी और उन्हें हिंदी साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण स्त्री लेखिकाओं में गिना जाता है।

जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद हिंदी साहित्य के छायावादी युग के प्रमुख कवि और नाटककार थे। उन्होंने अपनी रचनाओं में इतिहास, पौराणिक कथाओं और समाज के मुद्दों का मिश्रण किया। प्रसाद ने भारतीय साहित्य में एक नई शैली का विकास किया, जिसे छायावाद कहा जाता है, जो मुख्य रूप से आत्माभिव्यक्ति और मानव जीवन के गूढ़ रहस्यों पर केंद्रित था।

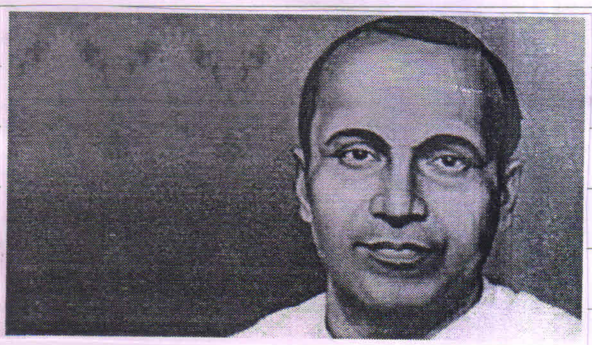

प्रसाद की प्रमुख कृतियों में "कामायनी", "आंसू" और "लहर" शामिल हैं। "कामायनी" को उनकी सबसे महत्वपूर्ण कृति माना जाता है, जिसमें मानवता, प्रेम, त्याग और ज्ञान के विभिन्न पक्षों का गहन चित्रण किया गया है। यह महाकाव्य भारतीय दर्शन और समाज के विभिन्न पहलुओं को दर्शाता है।

प्रसाद ने न केवल कविताएँ लिखीं बल्कि नाटकों और कहानियों में भी अपनी कलम का जादू दिखाया। उनके नाटक जैसे "स्कंदगुप्त" और "चंद्रगुप्त" भारतीय इतिहास और संस्कृति का गहन अध्ययन प्रस्तुत करते हैं। उनकी रचनाओं में देशभक्ति, समाज सुधार और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए प्रेरणा मिलती है।

रामधारी सिंह दिनकर

रामधारी सिंह दिनकर हिंदी के एक महान राष्ट्रवादी कवि थे, जिन्हें उनकी क्रांतिकारी कविताओं के लिए जाना जाता है। उनका साहित्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय लिखा गया और इसमें स्वतंत्रता, राष्ट्रीयता और समाज के प्रति उनकी गहरी चिंता झलकती है। दिनकर की कविताएँ जनमानस में जोश और क्रांति की भावना भरने वाली होती थीं।

उनकी प्रमुख कृतियों में "रश्मिरथी", "कुरुक्षेत्र", और "परशुराम की प्रतीक्षा" शामिल हैं। "रश्मिरथी" में महाभारत के कर्ण की कहानी को प्रस्तुत किया गया है, जो संघर्ष, स्वाभिमान और आत्मसम्मान का प्रतीक है। कर्ण की तरह ही दिनकर की कविताएँ भी अन्याय के खिलाफ संघर्ष और मानवता के लिए न्याय की बात करती हैं।

दिनकर की कविताओं में राष्ट्रीयता और समाज सुधार के तत्व प्रमुख रूप से दिखाई देते हैं। उनकी काव्य शैली ओजपूर्ण और जोशीली थी, जिसने समाज को जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्हें हिंदी साहित्य में उनके योगदान के लिए पद्म भूषण और साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

हरिवंश राय बच्चन

हरिवंश राय बच्चन हिंदी के एक महान कवि थे, जिन्हें उनकी कृति "मधुशाला" के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। उनकी कविताएँ मानवीय भावनाओं, जीवन के संघर्षों और आशावाद से भरी होती हैं। "मधुशाला" एक रूपक कविता है जिसमें जीवन को एक मदिरालय के रूप में प्रस्तुत किया गया है, और कवि ने उसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं का गहन चित्रण किया है।

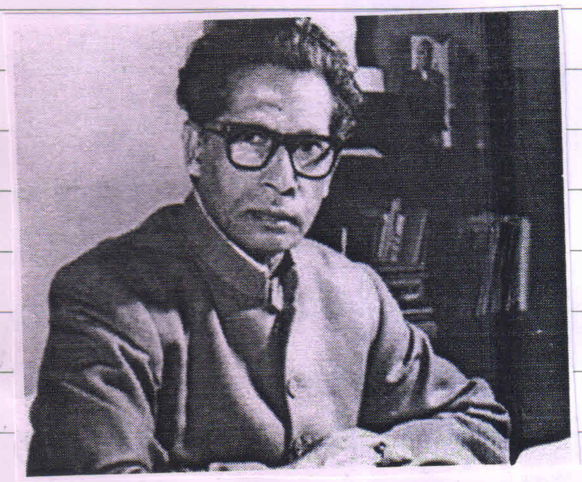

बच्चन की काव्य शैली सरल लेकिन गहरी होती थी। उन्होंने अपनी कविताओं में प्रेम, संघर्ष, जीवन और मृत्यु के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया। उनकी अन्य प्रसिद्ध कृतियों में "मधुबाला", "मधुकलश", और "निशा निमंत्रण" शामिल हैं।

हरिवंश राय बच्चन की कविताएँ जीवन के विभिन्न अनुभवों और भावनाओं का प्रतीक होती हैं। उन्होंने जीवन के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया और कठिनाइयों के बावजूद आशावादी बने रहने की प्रेरणा दी। बच्चन को उनके साहित्यिक योगदान के लिए पद्म भूषण और साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

निष्कर्ष

मुंशी प्रेमचंद, महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद, रामधारी सिंह दिनकर और हरिवंश राय बच्चन - इन पाँचों रचनाकारों ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। प्रत्येक ने अपने-अपने तरीके से समाज, राजनीति और मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को चित्रित किया। प्रेमचंद ने जहाँ समाज के निचले तबके की समस्याओं को सामने लाया, वहीं महादेवी वर्मा ने नारी विमर्श को गहराई से समझा। जयशंकर प्रसाद ने छायावादी कविता के माध्यम से आत्मा की गहराई को छुआ, जबकि दिनकर ने राष्ट्रवाद और समाज सुधार की भावना को अपनी कविताओं में उकेरा। हरिवंश राय बच्चन ने जीवन के संघर्षों और भावनाओं को काव्य रूप में प्रस्तुत किया। इन सभी ने हिंदी साहित्य को एक नई ऊँचाई प्रदान की।